

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



Founder's Essay

मान्यता के दयामय शब्द

आपके आस-पास ऐसे लोग हो सकते हैं, जो लापरवाही में बिना किसी दबाव के ऐसे कार्य करने की हिम्मत करते हैं जिससे आपको सदमा लगता है। मुझे संदेह है कि आप भी यह सोचकर, उनके साथ अपना धैर्य को खो सकते हैं कि "किस तरह का व्यक्ति ऐसा काम करेगा?" लेकिन मैं चाहूँगा कि आप अपने को उस व्यक्ति के स्थान पर रखें।

मैं मानता हूँ कि उस व्यक्ति ने अपने आस-पास के लोगों की आलोचना और फटकार के प्रति अपने दिमाग को बंद कर लिया है, और अपने को सुरक्षा कवच की परतों से ढक लिया है। यहाँ तक कि यदि आप उसके उल्टे चलन की भर्त्सना कर उसे सीधे राह पर लाने की कोशिश करते हैं, तो भी वह शायद आपकी बातें नहीं मानेगा।

जब तक लोग भीतर मन से यह अनुभव नहीं करते हैं, वे चीजों को स्वीकार नहीं करेंगे, चाहे कितनी भी भर्त्सना की जाय, उनको कोई फर्क नहीं पड़ता है। क्या महत्वपूर्ण है, यह जानना है कि उनके दिलों को क्या

अपील करता है ताकि वे गंभीर हो जाएँ। यह सब दिल से दिल के संपर्क का एक बिंदु तक ले जाता है।

जो लोग वास्तव में अपने मानद में पीछे हटकर अपनी रक्षा करते हैं, वे वास्तव में चाहते हैं कि कोई उनका सच्चा सहयोगी हो।

"एक बोधिसत्व के दयामय शब्द" एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है कोमल शब्दों के साथ बोलना। लेकिन भले ही आप एक पटु वक्ता नहीं हैं, यदि आप उस व्यक्ति को मानते हैं और उनकी चिंताओं को पहचानने का एक अच्छा संकेत दे सकते हैं, तो यह अकेले एक शानदार "दयामय शब्द" है।

निकक्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 232 - 233

Living the Lotus
Vol. 167 (August 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rishso Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

रिशो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निकक्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

अपने स्वयं के कोष को चमकाओ

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



इस युग में आत्मविश्वास का होना मुश्किल है

“यह उनके लिए अनुकूल है, लेकिन हमारे लिए नहीं।” इस तरह का सेट वाक्यांश है जो माता-पिता कहते हैं, जब उनके बच्चे उन्हें कुछ खरीदने के लिए कहते हैं और दूसरे लोगों या अन्य घरों से तुलना करते हैं। हम इस वाक्यांश को आसानी से समझ में आनेवाले शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के अनूठे तरीके से जीवन में पीछा कर रहा है-इसलिए, अपने और दूसरों के बीच तुलना करने की आवश्यकता नहीं है।

फिर भी, दूसरों से ईर्ष्या करनेवाले, या कभी-कभी उनसे हीन भावना का शिकार रहनेवाले के लिए यह एक स्वाभाविक मानवीय भावना हो सकती है। कई लोगों के लिए, ये भावनाएँ अधिक प्रयास करने, अपनी क्षमता विकसित करने और स्वयं को बेहतर बनाने के लिए स्प्रिंगबोर्ड है।

हमें बौद्ध धर्म की देशना है कि कैसे स्वयं को अन्य से तुलना करना हमारे मन को ढक ले सकता है। यहाँ तक कि अगर हम अन्य लोगों से ईर्ष्या करते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें, ताकि हम अपनी इच्छाओं को अत्यधिक बढ़ने या दुश्मनी को असीम तक जाने नहीं दें।

मुझे लगता है कि हाल में ही, उन लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिनके पास अपने पर बहुत कम विश्वास है और यहाँ तक कि स्वयं को आश्रित किया है कि उनका जीवन मूल्यवान नहीं है। पुण्डरीक सूत्र परिवर्त-4: “विश्वास और विवेक”, में धनी पिता और निर्धन पुत्र बेटे का दृष्टान्त है। इस दृष्टान्त में दिखाई देनेवाला निर्धन पुत्र एक ऐसा ही व्यक्ति है। पुत्र इधर उधर भटकता हुआ दुर्लभ जीवन व्यतीत कर रहा था, लेकिन उस पर उस धनाढ्य व्यक्ति का भरोसा होने लगा जिसने उसे नौकरी पर रखा था-इतना ही नहीं, उसे सोने, चाँदी और अन्य खजानों के भंडारगृहों का प्रभारी बना दिया गया था। फिर भी, पुत्र अभी भी अपने आप को अयोग्य समझता था और अपनी दास भावनाओं को हिला नहीं पा रहा था।

तो, निर्धन पुत्र की तरह अधिक से अधिक लोग अपने पर विश्वास करने में असमर्थ क्यों हैं? यह हो सकता है क्योंकि यह एक ऐसा युग है जिसमें सूचनाओं का अतिरेक होता है जो इच्छाओं को उत्तेजित करता है। यह कई लोगों को प्रवृत्त करता है कि वे स्वयं की तुलना दूसरों के साथ करके और उनके जीवन में कई और चीजों को रखने में सक्षम होने के आधार पर आर्थिक असमानता के इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।





अपने बुद्धस्वभाव को आगे लाना

एक मूल्य प्रणाली है जो कहती है कि यदि आप अन्य लोगों की तुलना में गरीब हैं, तो आपको दुःखी और पीड़ित होना चाहिए। यह मूल्य प्रणाली, वास्तव में, स्थायी नहीं है, लेकिन यदि अन्य लोगों की तुलना में गरीब होने के कारण, आप अपना आत्मविश्वास और आशा खो देते हैं, वह आपके अलावा कोई और नहीं है जिसने यह निर्धारित किया है कि इस मूल्य प्रणाली के आधार पर आप दुःखी हैं। हमारा जीवन कारणों और परिस्थितियों के अनुसार बदलते हैं, और स्थिर स्थिति में कुछ भी नहीं है। इसलिए, यदि आप अपने इस लेबल में विश्वास के कारण पीड़ित हैं और आत्मविश्वास और आशा खो रहे हैं, तो आपका जीवन व्यर्थ हो सकता है।

हीन भावना और स्वयं को बेहतर बनाने की इच्छा एक ही सिक्के के विपरीत पक्ष हैं। ठीक, क्योंकि आपके मन के अन्तरतल में एक बेहतर जीवन जीने की लालसा, पर, कभी-कभी नकारात्मक भावनाएँ उभर आती हैं। हालाँकि, यदि आप इस विचार से अविभूत हैं कि आपकी अपनी नाखुशी समाज की गलती है या अन्य लोगों की गलती है, तो हीन भावना, जिसे परिपक्वता का पोषण करना चाहिए, वह आगे चलकर चिखने चिल्लाने का ईंधन बनने से आगे नहीं जाती है, और इससे आत्म-सुधार नहीं हो सकता है।

निर्धन पुत्र के दृष्टांत पर लौटते हुए, जब धनाढ्य व्यक्ति का जीवन अपने अंतिम अवस्था में था, उसने अपने बिस्तर के आसपास इकट्ठा हुए लोगों को घोषित किया, “यह आदमी मेरा पुत्र है, जो बच्चपन में ही खो गया था। मेरी सारी धनसंपत्ति उसकी है।” यह वह क्षण है जब निर्धन पुत्र, जो अपने को अयोग्य समझता था, उसे अपने कोष (बुद्ध-स्वभाव) से अवगत हो गया। धनाढ्य व्यक्ति के शब्दों में उनके वास्तविक अर्थ के साथ समाहित है, जिसका अर्थ है कि सभी लोग बुद्ध के सन्तान हैं, और यह उनका बुद्ध-स्वभाव है, वे बुद्ध के समान हैं और एक ही हैं। इसलिए, उन्हें आश्वस्त होना चाहिए और अपने स्वयं के कोष (बुद्ध-स्वभाव) को चमकाने देना चाहिए।

इस दृष्टांत के माध्यम से, बुद्ध हमें बता रहे हैं कि केवल अपने स्वयं के कोष से अवगत होने की खुशी से संतुष्ट होने के बजाय, यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को अपने अवगत होने की बात करते हैं जो अभी तक अपने स्वयं के कोष के बारे में नहीं जानता है और उनसे बातचीत जारी रखते हैं जो अपने कोष को चमकाते हैं, आपका स्वयं का बुद्ध-स्वभाव भी उज्ज्वल होता है।

बुद्ध की धर्मदेशना में श्रद्धा विश्वास और उसकी समझ का अर्थ “विश्वास एवं विवेक” है। इसलिए, आइए विश्वास करें और समझें कि सभी के पास बुद्धस्वभाव का कोष है, और आगे बढ़ना जारी रखें और आत्मविश्वास से भरा जीवन जीते रहें।

कोसेइ से, अगस्त 2019



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र अध्याय 10: धर्मभाणक (1)

धर्मभाणक कौन है?

इस अध्याय का शीर्षक केवल भिक्षुओं और पुजारियों को संदर्भित नहीं करता है; कोई भी व्यक्ति जो दूसरों को बुद्धधर्म की शिक्षा देता है, वह धर्मभाणक है। यह अध्याय महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका हमारे स्वयं के जीवन की आस्था के साथ सबसे अधिक अंतरंग संबंध है और यह धर्मभाणक के मन के फ्रेम की ओर इंगित करता है, विशेषकर वह भावना जो हमें धर्म के हास के युग में दूसरों को धर्म की शिक्षा देते समय अवश्य रखनी चाहिए। यह अध्याय उन लोगों की योग्यता को भी दर्शाता है जो धर्म की सही तरीके से शिक्षा देते हैं।

सबसे पहले ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस अध्याय में, शैली में एक अलग परिवर्तन है, क्योंकि यहाँ से बुद्ध की विवेचना बोधिसत्त्व को निर्देशित किए जाते हैं। अब तक लोगों की धारणा थी कि श्रावकों, प्रत्येक बुद्धों और बोधिसत्त्वों के बीच अंतर है। पूर्व के अध्यायों में बुद्ध ने इस बात पर जोर दिया है कि कोई आवश्यक अंतर नहीं है-वे सभी बोधिसत्त्व हैं, जो बुद्धत्व के मार्ग पर चल रहे हैं। अपने कथन को सिद्ध करने के लिए, उन्होंने कई श्रावकों के बुद्धत्व प्राप्ति की भविष्यवाणियाँ की (श्रावक शब्द के प्रयोग में प्रत्येकबुद्ध शामिल हैं)।

यही कारण है कि इस दृष्टि से श्रावक विशेष रूप से बोधिसत्त्व हैं। वे अब भी पहले जैसे ही लोग हैं, परन्तु सुनने के बाद उनकी भावना में भारी बदलाव आया है, क्योंकि वे इस तथ्य के प्रति जागृत हैं कि वे वास्तव में बोधिसत्त्व हैं। इस कारण से, बुद्ध ने अपने पूर्व के सम्बोधन में शारिपुत्र, महा-कश्यप के साथ लगे भिक्षु को बदलकर केवल बोधिसत्त्व कर दिया, जैसेकि बोधिसत्त्व भैषज्यगुरु या बोधिसत्त्व मंजुश्री।

धर्मदेशना के सुनने में आनन्द लेना

अध्याय के प्रारंभ में शाक्यमुनि ने घोषणा की, “यदि इनमें से कोई भी जीवित प्राणी मेरे इस सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का एक भी गाथा या एक भी वाक्यांश सुनता है और एक पल के लिए ही आनन्दित होता है, मैं उसे बद्धत्व प्राप्ति का आश्वासन देता हूँ-वह अवश्य बुद्ध के सम्यक् सम्बुद्धत्व को प्राप्त करेगा।”

हम साधारण दैनिक जीवन में कुछ उदाहरणों से जानते हैं कि एक व्यक्ति का लचीला मन, जो महान विभूतियों के शब्दों से सीधे प्रभावित हो जाता है, वह महान सफलता प्राप्त करने में सक्षम है। दूसरी ओर, बहुत से लोग जो केवल व्यक्तिगत लाभ में रुचि रखते हैं, वे कुछ प्राप्त कर ले सकते हैं या थोड़ी सुरक्षा हासिल कर ले सकते हैं, लेकिन बड़ी सफलता उनकी पहुँच से परे हो सकती है, और वे इतिहास में रिकॉर्ड होने लायक कुछ भी नहीं करते हैं।

हमारे धार्मिक जीवन में सबसे अधिक सत्य है। बुद्ध की धर्मदेशना सभी महान चीजों में सबसे महान है। यदि कोई व्यक्ति जो धर्मदेशना को सुनता है, वह ईमानदारी से आगे बढ़ता है, उस पर विश्वास करता है, और असीम ऊँचाइयों को प्राप्त करता है।

जन्म लेने की आकांक्षा

बोधिसत्त्व वह है जो बुद्ध बनने के निमित्त हैं, परन्तु जीवित प्राणियों के ऊपर अनुकम्पा करके अपने सुखावति में पुनर्जन्म का परित्याग करता है और मानव प्राणी के रूप में पुनर्जन्म की आकांक्षा करता है। बोधिसत्त्व का पुनर्जन्म कुशल या अकुशल कर्मों के परिणामस्वरूप नहीं होता है, बल्कि सभी जीवित प्राणियों के उद्धार के लिए उसकी महाकरुणा और आकांक्षा के कारण होता है। इसे “आकांक्षा से जन्म” कहा जाता है और इसका अर्थ किसी ऐसे व्यक्ति से है जो “स्वेच्छा से जन्म लेता है।”





इसलिए, कोई भी बोधिसत्त्व के रूप में कार्य कर सकता है क्योंकि बुद्ध और बोधिसत्त्व का पुनर्जन्म इच्छानुसार, जिस भी शरीर और स्थान में चाहें, हो सकता है। दूसरे शब्दों में, वे स्वयं स्वतंत्र रूप से अवतरित हो सकते हैं। इस प्रकार हमें यह विचार करना चाहिए कि एक व्यक्ति जो पुण्डरीकसूत्र की धर्मदेशना को प्राप्त करता है, उसे रखता है और वह अपने को उसके प्रचार प्रसार में समर्पित करता है, हालाँकि एक सामान्य व्यक्ति प्रतीत होता है, वास्तव में बुद्ध या बोधिसत्त्व है जिसने लोक के उद्धार के लिए परिवर्तित रूप में प्रकट हुआ है। ऐसा व्यक्ति सर्वोच्च सम्मान के योग्य है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि हम स्वयं इसका अनुभव करें। ऐसा अनुभव स्वार्थ भरा नहीं है, बल्कि एक पवित्र सजगता है, जब कोई अपने को प्रबुद्ध या गुणी मानता है, जो वह वास्तव में नहीं है। इस तरह की हमारी पवित्र सजगता में कुछ भी अकीर्तिकर नहीं है। हमें ऐसा जीवन जीने की आवश्यकता है जो अन्य लोगों और समाज के लिए लाभकारी है। हमारे हृदय की गहराई जो निकलता है, वह न केवल निश्चेष्ट रूप से शुद्ध है, दूसरों के सहज लाभ के लिए हमारे लिए आवश्यक है कि पुण्डरीकसूत्र के प्रचार प्रसार में योगदान करें। यह बोधिसत्त्व की स्थिति है।

धार्मिक अभ्यास एवं आस्था देशना के श्रवण के आनन्द को बनाए रखता है

ऐसी सजगता से बोधिसत्त्व और अधिक सशक्त होते हैं, यदि हम देशना के श्रवण के आनन्द को मिटने नहीं देते हैं, बल्कि इसे बनाए रखने की कोशिश करते हैं। दूसरे शब्दों में, देशना को सुनने का आनंद तभी सार्थक सिद्ध होता है जब हम उसका पालन धार्मिक अभ्यास और आस्था (या चढ़ावा) के द्वारा करते हैं। आस्था बुद्ध एवं उनकी देशना के प्रति अगाध कृतज्ञता का प्रदर्शन है और अपने मन की सच्चाई को पूजार्चना तथा चढ़ावा देकर व्यक्त करना है।



यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम "प्रत्येक वस्तु का सार एवं उसकी रूपरेखा" शीर्षक से (कोसेइ प्रकाशन, 1991 [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 99-104) प्रकाशित है।

अपने अन्दर बुद्ध-स्वभाव को जगाना

इस माह के अपने संदेश में प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने लोटस सूत्र, परिवर्त-4 ("विश्वास और विवेक") के धनी पिता और निर्धन पुत्र के दृष्टांत को उद्धृत किया।

हम एक ऐसे युग में रहते हैं जब हीन भावना वाले लोगों की संख्या, और जिन लोगों को सामान्य रूप से अपने आप पर थोड़ा भरोसा है, बढ़ रहा है, लेकिन जैसा कि दृष्टांत बताता है, हम सभी बुद्ध के पुत्र हैं। बिना किसी अपवाद के, हर किसी के पास बहुमूल्य और चमकता बुद्ध-स्वभाव है। जो कुछ महत्वपूर्ण है, वह है अपने आप में और दूसरों में निहित बुद्ध स्वभाव में विश्वास और समझना और आगे बढ़ना और आत्मविश्वास के साथ सभी के जीवन का नेतृत्व करना है।

बोधिसत्त्व के रूप में हमारी भूमिका सभी लोगों के साथ जुड़ने की है, ताकि हम केवल अपने बारे में सोचने के बजाय उन्हें आशा और खुशी दे सकते हैं।

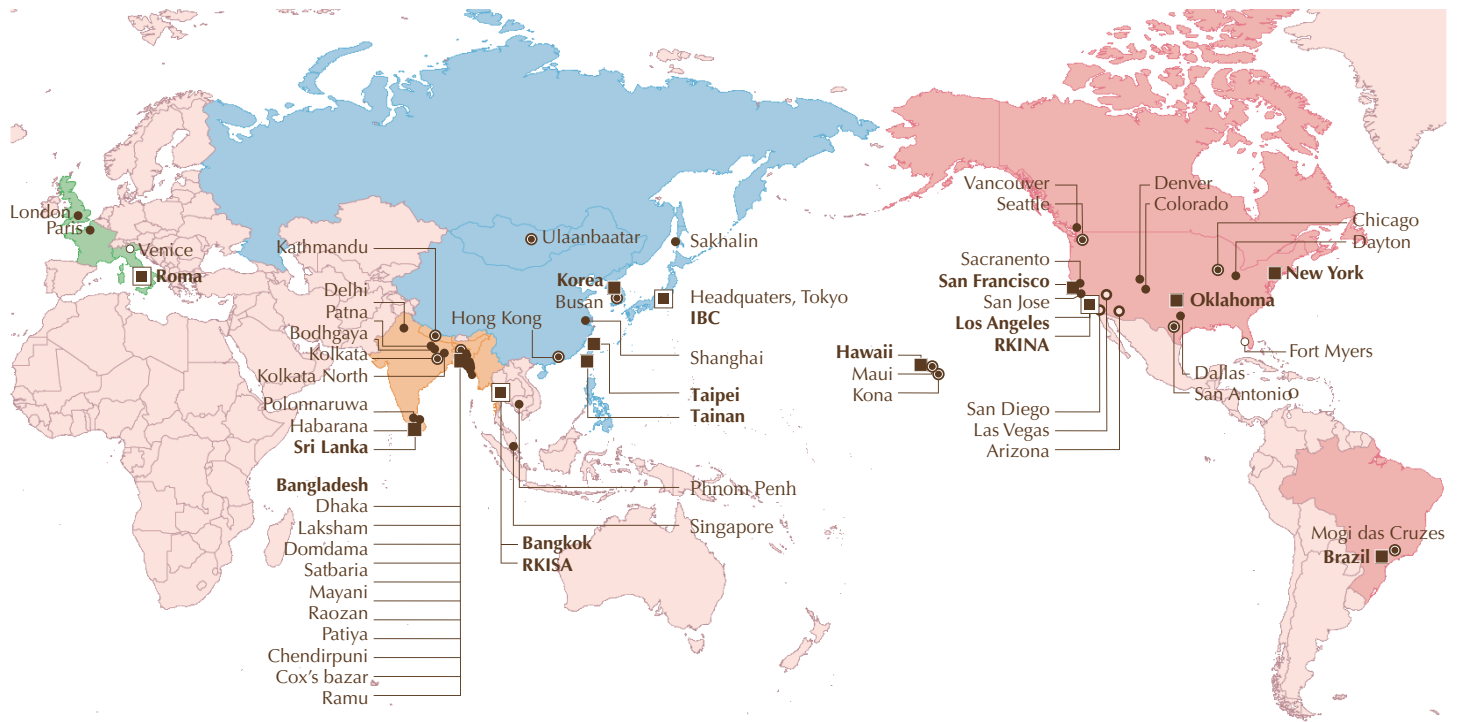
ऐसा होने के लिए, मुझे आशा है कि हम सभी अपने दैनिक जीवन में बार-बार धर्मदेशनाओं का अध्ययन और अभ्यास करते हुए, बोधिसत्त्व की चर्या में पूर्ण सजगता से प्रयत्नशील रहकर अमूल्य कोष को पहचान लेंगे।

रेव. कोइची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
 Email: info@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
 POBox 33636, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
 TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437
 Email: info@rksf.org URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
 TEL: 1-212-867-5677 Email: rksny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
 TEL: 1-773-842-5654
 Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
 Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
 TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
 Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
 (Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
 TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
 Email: dharmasanantonio@gmail.com
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
 TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
 Email: rkseattlewashington@gmail.com
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
 Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,
Orkhon province, Mongolia

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Paris

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibrk.org>